अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 | संख्या 86 | श्री विजय पुरम, सोमवार, 30 मार्च 2026 | web: dt.andamannicobar.gov.in | 2.00 रूपए

द्वीपों के 38 ग्राम पंचायत एवं 18 जनजातीय गाँव 'टीबी मुक्त' घोषित

श्री विजय पुरम, 29 मार्च

राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के अंतर्गत 'टीबी मुक्त पंचायत' पहल के तहत एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में वर्ष 2025 के लिए 38 ग्राम पंचायतों एवं 18 जनजातीय गाँवों को "टीबी मुक्त" घोषित किया गया है। कुल 38 ग्राम पंचायतों में से 14 दक्षिण अण्डमान ज़िले से, 22 उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िले से तथा 2 निकोबार ज़िले से संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त, निकोबार ज़िले के 18 जनजातीय गाँवों ने भी 'टीबी मुक्त' का दर्जा प्राप्त किया है। इन प्रमाणनों को विश्व क्षय रोग दिवस 2026 के अवसर पर संबंधित ज़िलों के उपायुक्तों द्वारा प्रदान किया गया, जो क्षय रोग उन्मूलन के क्षेत्र में ज़मीनी स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन की मान्यता है। 'टीबी मुक्त' का दर्जा 'टीबी मुक्त पंचायत' ढाँचे के अंतर्गत निर्धारित प्रमुख कार्यक्रमगत संकेतकों की प्राप्ति के आधार पर दिया जाता है, जिनमें शामिल हैं:

- संभावित टीबी मामलों की उच्च जाँच दर (प्रति 1,000 जनसंख्या पर प्रतिवर्ष 30 के बराबर से कम)
- टीबी अधिसूचना दर में कमी (प्रति 1,000 जनसंख्या पर प्रतिवर्ष 1 के बराबर से भी बड़ा)
- उपचार सफलता दर उच्च (85 प्रतिशत से अधिक)
- औषधि संवेदनशीलता परीक्षण की पर्याप्त कवरेज (सूचित मामलों का कम से कम 60 प्रतिशत)
- निक्षय पोषण योजना के अंतर्गत 100 प्रतिशत कवरेज (सभी पात्र टीबी रोगियों को कम से कम एक किस्त)
- प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत टीबी रोगियों के लिए 100 प्रतिशत पोषण सहायता कवरेज

राज्य टीबी इकाई ने बताया कि यह उपलब्धि क्षेत्रीय स्तर पर सशक्त कार्यान्वयन, शीघ्र निदान, प्रभावी उपचार अनुपालन तथा रोगी सहायता प्रणालियों की मजबूती को दर्शाती है। समुदाय की निरंतर भागीदारी तथा पंचायती राज संस्थाओं के साथ समन्वय इस सफलता के प्रमुख कारक रहे हैं।

आगे यह भी बताया गया कि भविष्य में सक्रिय मामलों की पहचान को सुदृढ़ करने, सभी के लिए जाँच एवं उपचार की सार्वभौमिक उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा अधिक पंचायतों एवं गाँवों को 'टीबी मुक्त' प्रमाणन के दायरे में लाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

टीबी मुक्त ग्राम पंचायत एवं जनजातीय गाँव–2025 (अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह) के अंतर्गत दक्षिण अण्डमान ज़िले में प्रोथरापुर खंड के तहत बिड़नाबाद, फरारगंज खंड के तहत शोल बे, विम्बर्लीगंज, स्टीवर्टगंज, फरारगंज, टुसनाबाद, मीठाखाड़ी, छोलदारी, गुप्तापाड़ा, बम्बूफ्लाट–2, कॉलिनपुर, लिटिल अण्डमान के तहत नेताजी नगर, रबीन्द्र नगर, विवेकानंदपुर आदि पंचायतें शामिल हैं।

उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िले में डिगलीपुर खंड के तहत लक्ष्मीपुर, केरलापुरम, शिबपुर, गांधीनगर, किशोरीनगर, पश्चिम सागर, नबग्राम, कालीघाट, मायाबंदर खंड के तहत मायाबंदर, पोकाडेरा, पहलगांव, चैनपुर, बसंतीपुर, रंगत खंड के तहत नीम्बूतला, पर्णशाला, दशरथपुर, सबरी, बकुलतला, कौशल्यनगर, कदमतला, लांग आइलैंड, नीलाम्बूर आदि पंचायतें शामिल हैं।

निकोबार ज़िले में ग्रेट निकोबार खंड के तहत लक्ष्मीपुर तथा गोविंदनगर आदि पंचायतें शामिल हैं।

निकोबार ज़िले के अंतर्गत टीबी मुक्त जनजातीय गांवों में कार निकोबार खंड के तहत तमालू, टीटॉप, ननकौड़ी खंड के तहत कमोर्टा, डेरिंग, विकासनगर, छोटा इनाका, जापान टेकरी, अपर कछाल, ई–वाल, स्इहे–ऑन, कुइतासुक, चिंगामोंग, अलहीट, ताहिला, कलासी, मिन्यूक, लक्सी तथा अलुरोंग आदि जनजातीय गांव शामिल हैं। (स्रोतः राज्य स्वास्थ्य सोसायटी, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह)

शुभकामनाएँ

30 मार्च, 2026 को राजस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर, इस शानदार राज्य की जनता को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

राजस्थान भारत की शाश्वत आत्मा का प्रतिबिंब है, एक ऐसी भूमि जहाँ इतिहास रेत के हर कण, हर नक्काशीदार पत्थर और हर जीवंत परंपरा में जीवित है। थार रेगिस्तान के विशाल विस्तार से लेकर जयपुर के भव्य महलों तक, यह राज्य साहस, दृढ़ता और समृद्ध, चिरस्थायी सांस्कृतिक विरासत की एक प्रेरणादायक गाथा प्रस्तुत करता है।

अपने उल्लेखनीय सफर में, राजस्थान रियासतों के एक समूह से विकसित होकर एक एकीकृत और प्रगतिशील इकाई बन गया है, जो अपनी समृद्ध विरासत को खूबसूरती से संरक्षित करते हुए आधुनिकता की ओर निरंतर अग्रसर है। उन्नति, शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता राज्य की चिरस्थायी विरासत का आधार है। राजस्थान की असली शक्ति उसके लोगों में निहित है–मेहनती किसान, कुशल कारीगर, ऊर्जावान युवा और प्रत्येक नागरिक जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना से एकजुट होकर 'विकसित भारत' के सपने को साकार करने में योगदान दे रहे हैं।

इस विशेष अवसर पर, मैं इन द्वीपों में रहने वाले राजस्थान के लोगों और उन सभी लोगों के लिए सुख, समृद्धि और निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ जो इस महान राज्य की विरासत को अपने हृदय में संजोए हुए हैं।

ह.
(एडमिरल डी. के. जोशी)
पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एनएम, वीएसएम (अ.प्रा.)
उप राज्यपाल
अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
एवं उपाध्यक्ष, द्वीप विकास एजेंसी

अण्डमान तथा निकोबार कमान ने 'एक्स द्वीप शक्ति 2026' के दौरान बहु–क्षेत्रीय संयुक्त युद्ध संचालन का नेतृत्व किया

श्री विजय पुरम, 29 मार्च

अण्डमान तथा निकोबार कमान (एएनसी) ने 'एक्स द्वीप शक्ति 2026' नामक एक बड़े पैमाने का संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित किया, जिसमें भारतीय थल सेना, भारतीय नौसेना, भारतीय वायु सेना तथा भारतीय तटरक्षक बल की परिसंपत्तियों के साथ देशभर से सैनिकों एवं विभिन्न सैन्य संरचनाओं ने भाग लिया। इस अभ्यास का उद्देश्य बहु–क्षेत्रीय संयुक्त युद्ध संचालन क्षमताओं तथा मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) को परिष्कृत करना, साथ ही भाग लेने वाली सेनाओं के बीच परस्पर समन्वय एवं परिचालन सामंजस्य को सुदृढ़ करना था।

इस अभ्यास में एएनसी की थल सेना, नौसेना, वायु सेना

शेष पृष्ठ 4 पर

दक्षिण अण्डमान में 'राष्ट्रीय एकता दौड़' मैराथन सफलतापूर्वक सम्पन्न

श्री विजय पुरम, 29 मार्च

दक्षिण अण्डमान ज़िला प्रशासन द्वारा 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के उपलक्ष्य में 29 मार्च, 2026 को "राष्ट्रीय एकता दौड़" मैराथन का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 100 महाविद्यालयीन छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी ऊर्जा तथा खेल भावना का शानदार प्रदर्शन करते हुए एकता, सद्भाव और सामुदायिक सहभागिता के मूल्यों को प्रोत्साहित किया।

मैराथन दो श्रेणियों में आयोजित की गई–लड़कों के लिए 10 किलोमीटर और लड़कियों के लिए 5 किलोमीटर। लड़कों की 10 किलोमीटर दौड़ सेल्यूलर जेल से प्रारंभ होकर विज्ञान केंद्र तक गई और पुनः लौटते हुए नेताजी स्टेडियम में समाप्त हुई। वहीं, लड़कियों की 5 किलोमीटर दौड़ सेल्यूलर जेल से प्रारंभ होकर सी क्लिफ होटल तक गई और वापस लौटकर नेताजी स्टेडियम में समाप्त हुई।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती पूर्वा गर्ग (आईएएस), उपायुक्त, दक्षिण अण्डमान द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए शारीरिक फिटनेस, अनुशासन और सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला। पूरे आयोजन के दौरान छात्रों ने सराहनीय उत्साह, ऊर्जा और खेल

भावना का परिचय दिया।

मैराथन के समापन के उपरांत नेताजी स्टेडियम में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें लड़कों और लड़कियों दोनों श्रेणियों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त, मैराथन में भाग लेने वाले सभी छात्रों को सहभागिता प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार ज़िला प्रशासन ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग के लिए सभी महाविद्यालयीन छात्रों, शिक्षा विभाग, 'माई भारत' तथा अन्य सहयोगी विभागों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

श्री विजय पुरम में केंद्र शासित प्रदेश स्तरीय 'विकसित भारत युवा संसद (वीबीवाईपी)–2026' आयोजित

श्री विजय पुरम, 29 मार्च

केंद्र शासित प्रदेश स्तरीय 'विकसित भारत युवा संसद (वीबीवाईपी)–2026' का सफल आयोजन भारत सरकार के युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय के 'विकसित भारत युवा कनेक्ट कार्यक्रम' के अंतर्गत माई भारत, श्री विजय पुरम द्वारा 27 मार्च, 2026 को यहां के टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय (टीजीसीई) के मिनी कॉन्फ्रेंस हॉल में किया गया। इस कार्यक्रम ने युवाओं को "केंद्रीय बजट 2026: विकसित भारत 2047 की दिशा में भारतीय युवाओं की भूमिका को सशक्त बनाना" विषय पर लोकतांत्रिक विचार–विमर्श हेतु एक सशक्त मंच प्रदान किया।

माननीय उप राज्यपाल, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के संयुक्त सचिव डॉ. अपूर्वा शर्मा (दानिक्स) ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अपने संबोधन में उन्होंने युवा प्रतिभागियों के आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल एवं विश्लेषणात्मक क्षमता की सराहना की तथा उन्हें विकसित भारत 2047 के विजन के अनुरूप राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

'आर्ट ऑफ लिविंग', अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के श्री रविंद्र राव विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने ज़िम्मेदार युवा नेतृत्व के निर्माण में स्पष्ट सोच, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं मूल्य–आधारित विचारधारा के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय (टीजीसीई) की प्राचार्या डॉ. मंजुलता राव एवं अण्डमान लॉ कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी.वी.एन. शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया तथा इस पहल की सराहना की।

शेष पृष्ठ 4 पर

परिवहन विभाग द्वारा सड़क सुरक्षा नियमों के पालन की अपील

श्री विजय पुरम, 29 मार्च।

सड़क दुर्घटनाएं देशभर में मृत्यु और गंभीर चोटों के प्रमुख कारणों में से एक बनी हुई हैं, जिससे बहुमूल्य मानव जीवन की क्षति होती है तथा परिवारों और समाज पर दीर्घकालिक सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव पड़ता है। भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सड़क दुर्घटनाओं और मृत्यु दर में हो रही वृद्धि पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को यातायात नियमों का सख़्ती से पालन सुनिश्चित करने तथा व्यापक जन–जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं, ताकि सभी सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए सुरक्षित वातावरण बनाया जा सके।

समय–समय पर आम जनता को मोटर वाहन कानूनों के प्रति जागरूक करने के प्रयास किए गए हैं। अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के परिवहन विभाग द्वारा एक बार फिर सभी सड़क उपयोगकर्ताओं से मोटर वाहन अधिनियम, 1988, केंद्रीय मोटर वाहन नियम (सीएमवीआर), एएनआईएमवीआर तथा सड़क नियम विनियम (आरआरआर) का सख़्ती से पालन करने की अपील की गई है, ताकि अपनी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और दूसरों को होने वाले नुक़सान से बचा जा सके। सड़क सुरक्षा के कुछ महत्वपूर्ण पहलू, जिनका उल्लंघन दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण बनता है, निम्नलिखित हैं:

पैदल यात्री एवं पैदल पार पथ

पैदल यात्री सड़क उपयोगकर्ताओं का सबसे संवेदनशील वर्ग हैं, इसलिए उन्हें विशेष सुरक्षा की आवश्यकता होती है। सभी पैदल यात्रियों को केवल निर्धारित ज़ेब्रा क्रॉसिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए और यातायात संकेतों का पालन करना चाहिए। अनधिकृत स्थानों से सड़क पार करना अत्यंत खतरनाक है। वाहन चालकों को पैदल पार पथ के पास गति कम करनी चाहिए, आवश्यकतानुसार रुकना चाहिए और पैदल यात्रियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। फुटपाथ और पैदल पार पथ पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण या पार्किंग सख़्त वर्जित है, क्योंकि इससे दुर्घटनाओं का जोखिम बढ़ता है। इन नियमों का उल्लंघन करने पर मोटर वाहन अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत दंड का प्रावधान है।

दुपहिया चालकों के लिए हेलमेट अनिवार्य

मोटर वाहन अधिनियम के अनुसार दुपहिया वाहन चालकों के लिए हेलमेट पहनना

अनिवार्य है। सड़क दुर्घटनाओं में सिर की चोटें मृत्यु का प्रमुख कारण होती हैं और मानक हेलमेट इनसे बचाव में अत्यंत प्रभावी है। चालक और पीछे बैठने वाले दोनों के लिए बीआईएस–प्रमाणित हेलमेट पहनना और उसे सही तरीके से बांधना आवश्यक है। बच्चों के लिए भी, जहां लागू हो, हेलमेट पहनना जरूरी है। उल्लंघन की स्थिति में 1000 रुपये का जुर्माना और तीन माह के लिए ड्राइविंग लाइसेंस निलंबन का प्रावधान है। हेलमेट पहनना केवल कानूनी बाध्यता ही नहीं, बल्कि नैतिक ज़िम्मेदारी भी है।

शेष पृष्ठ 4 पर

लिटिल अण्डमान में 9 अप्रैल से होने वाले आगामी सर्फिंग महोत्सव के लिए तंबू आवास की स्थापना

श्री विजय पुरम, 29 मार्च

पर्यटन विभाग, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन, सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के सहयोग से लिटिल अण्डमान में 9 से 12 अप्रैल, 2026 तक सर्फिंग महोत्सव–2026 का आयोजन कर रहा है। इस संदर्भ में, देश–विदेश के सर्फर और साहसिक गतिविधियों के शौकीनों के इस महोत्सव में भाग लेने की उम्मीद है। साथ ही, बड़ी संख्या में द्वीपवासियों और पर्यटकों के भी इस महोत्सव में शामिल होने और इसे देखने की संभावना है। सूचना, प्रचार एवं पर्यटन निदेशालय से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, पर्यटन विभाग उद्यमियों, हितधारकों और ट्रैवल एजेंटों को आवास की कमी को दूर करने के लिए 8 अप्रैल से 13 अप्रैल, 2026 तक निर्धारित स्थलों पर अस्थायी तंबू आवास सुविधाएं स्थापित करने के लिए आमंत्रित करता है। विभाग ऐसे तंबू आवास स्थापित करने के इच्छुक पक्षों को आवश्यक सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करेगा। इच्छुक पक्ष प्रस्तावित टेंटों की संख्या के विवरण सहित अपने आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं और ये आवेदन 31 मार्च,

2026 को या उससे पहले निदेशक (सूचना, प्रचार एवं पर्यटन) के कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए।

अण्डमान तथा निकोबार कमान ने 'एक्स द्वीप शक्ति —————पृष्ठ 1 का शेष

एवं तटरक्षक छावनियों के साथ–साथ तीनों सेनाओं की विशेष बल इकाइयों एवं अतिरिक्त बलों ने भाग लिया। भूमि, समुद्र और वायु क्षेत्रों में बहु–क्षेत्रीय अभियानों की विस्तृत श्रृंखला संचालित की गई, जिनका उद्देश्य यथार्थवादी एवं गतिशील वातावरण में संयुक्त परिचालन क्षमताओं का परीक्षण करना था। द्वीपों में थल, नौसैनिक एवं वायु संसाधनों की तैनाती के साथ–साथ अण्डमान तथा निकोबार के स्थानीय नागरिक प्रशासन के समन्वय से प्रमुख परिचालन एवं सहयोगी तंत्रों का सक्रियण इस अभ्यास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा।

'एक्स द्वीप शक्ति 2026' ने भारत के समुद्री हितों की सुरक्षा एवं अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की रक्षा सुनिश्चित करने में भारतीय सशस्त्र बलों की उच्च स्तरीय परिचालन तत्परता एवं सुदृढ़ सैन्य क्षमता का प्रदर्शन किया। इस अभ्यास ने एएनसी की विभिन्न छावनियों एवं भाग लेने वाली सैन्य संरचनाओं के बीच पेशेवर दक्षता, समन्वय और सामंजस्य को प्रदर्शित किया, जबकि जटिल संयुक्त अभियानों का संचालन एक गतिशील वातावरण में किया गया। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार वाइस एडमिरल अजय कोच्छर, पीवीएसएम, एवीएसएम, एनएम, कमांडर–इन–चीफ, अण्डमान तथा निकोबार कमान (सिनकैन) ने इस अभ्यास का अवलोकन किया तथा विभिन्न संरचनाओं से आए भाग लेने वाले सैनिकों की पेशेवर दक्षता और सफल संचालन के लिए उनकी सराहना की। इस प्रकार के अभ्यास रक्षा तैयारी को सुदृढ़ करने के साथ–साथ क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखने की प्रतिबद्धता को और मजबूत करते हैं।

श्री विजय पुरम में केंद्र शासित प्रदेश स्तरीय ————————पृष्ठ 1 का शेष

केंद्र शासित प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में कुल 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें हिमानी वाघ (टीजीसीई), कोमलप्रीत कौर (अण्डमान लॉ कॉलेज), दिशा सिंह (टीजीसीई), आर. संजना (टीजीसीई), एश्ली चाको (अण्डमान लॉ कॉलेज), देबोजीत हल्दर, अंशु टेटे, ब्लेसी गॉडविन, वरथराजन जयश्री एवं आफताब अहमद (महात्मा गांधी राजकीय महाविद्यालय, मायाबंदर) शामिल रहे। प्रतियोगिता में टैगोर कॉलेज की दिशा सिंह ने प्रथम स्थान, आर. संजना ने द्वितीय स्थान तथा अण्डमान लॉ कॉलेज की कोमलप्रीत कौर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शीर्ष तीन विजेता राष्ट्रीय स्तर की विकसित भारत युवा संसद में केंद्र शासित प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस अवसर पर कार्यक्रम के सफल आयोजन में उत्कृष्ट सहयोग हेतु टैगोर कॉलेज की प्राचार्या डॉ. मंजुलता राव, अण्डमान लॉ कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी.वी.एन. शर्मा, टैगोर कॉलेज के सहायक प्राध्यापक डॉ. सुनील सैनी एवं अतिथि व्याख्याता डॉ. सुनीता पाटिल को सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। इससे पूर्व मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ एवं शॉल भेंट कर किया गया। माई भारत, श्री विजय पुरम के संयुक्त निदेशक श्री सुख रंजन बिस्वास ने स्वागत भाषण दिया तथा कार्यक्रम के उद्देश्यों की जानकारी दी।

परिवहन विभाग द्वारा सड़क सुरक्षा नियमों ————————पृष्ठ 1 का शेष

गलत दिशा में वाहन चलाना और लेन अनुशासन

गलत दिशा में वाहन चलाना, लेन बदलने में अनुशासनहीनता और नियमों की अनदेखी गंभीर दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण है। सभी वाहन चालकों को सही दिशा में वाहन चलाना चाहिए, लेन चिन्हों और संकेतों का पालन करना चाहिए तथा असुरक्षित तरीके से लेन बदलने से बचना चाहिए। गलत दिशा से ओवरटेक करना, विशेषकर दुपहिया वाहनों द्वारा बाईं ओर से ओवरटेक करना, अत्यंत खतरनाक है। ऐसे उल्लंघनों पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

तेज रोशनी, स्टोब लाइट और अवैध हॉर्न का उपयोग

अत्यधिक तेज सफेद एलईडी लाइट, लाल/नीली फ्लैश या स्टोब लाइट, संशोधित लाइटिंग सिस्टम तथा अवैध मल्टी–टोन या प्रेशर हॉर्न का उपयोग सड़क सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है। इससे विशेषकर रात में अन्य चालकों को अस्थायी रूप से दिखाई देना बंद हो सकता है, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है। केवल निर्माता द्वारा अनुमोदित लाइट और हॉर्न का ही उपयोग किया जाना चाहिए। निजी वाहनों में ऐसे उपकरणों का उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है। उल्लंघन की स्थिति में संबंधित धाराओं के तहत दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने बार–बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि सड़क सुरक्षा सरकार, प्रवर्तन एजेंसियों और नागरिकों की साझा ज़िम्मेदारी है। जहां एक ओर प्रवर्तन एजेंसियां नियमों का सख़्ती से पालन सुनिश्चित करेंगी, वहीं स्थायी सुधार के लिए जनता का सहयोग और स्वैच्छिक पालन अत्यंत आवश्यक है।

सभी नागरिकों से अपील की जाती है कि वे यातायात नियमों का पालन करें, अन्य सड़क उपयोगकर्ताओं का सम्मान करें, जोखिमपूर्ण और आक्रामक व्यवहार से बचें तथा विशेषकर बच्चों और युवा चालकों के लिए सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करें। अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन का परिवहन विभाग सभी नागरिकों से सुरक्षित और ज़िम्मेदार सड़क उपयोग की संस्कृति विकसित करने का आह्वान करता है।

परिवहन निदेशालय द्वारा जारी विज्ञप्ति में सभी वाहन चालकों को सलाह दी गई है कि वे मोटर वाहन कानूनों का पालन करें, क्योंकि यह व्यक्तिगत सुरक्षा और कानूनी अनुपालन दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

"सुरक्षित सड़कें, सुरक्षित जीवन। आइए, मिलकर दुर्घटनाओं को रोकें और हर जीवन की रक्षा करें।"

दक्षिण अण्डमान में आरसीएच आउटरीच शिविर सहित टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा की गई

श्री विजय पुरम, 29 मार्च।

दक्षिण अण्डमान ज़िला स्वास्थ्य सोसायटी द्वारा, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के यूटी स्वास्थ्य मिशन–एनएचएम के तहत, 28 मार्च, 2026 को 100–दिवसीय टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आयुष्मान आरोग्य शिविर के साथ आउटरीच प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य (आरसीएच) शिविर का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम स्वास्थ्य सेवा निदेशालय और स्वास्थिया मेडिकल सेंटर के समन्वय से, दक्षिण अण्डमान की उपायुक्त श्रीमती पूर्वा गर्ग (आईएएस) के निर्देशों के अनुसार आयोजित किया गया।

इसके अतिरिक्त, श्री कमलेश्वर राव एस. (आईएएस), उप मंडलीय मजिस्ट्रेट, दक्षिण अण्डमान ने आज शहीद द्वीप स्थित आयुष्मान आरोग्य मंदिर/प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों, ज़िला कार्यक्रम प्रबंधक (डीएचएस–एसए) एवं अन्य अधिकारियों के साथ मिलकर स्वास्थ्य केंद्र की अवसंरचना और सेवाओं की समीक्षा की। उन्होंने चिकित्सा अधिकारी (प्रभारी) को उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने के निर्देश दिए तथा एपीडब्ल्यूडी के कनिष्ठ अभियंता को स्वीकृत उन्नयन कार्य को शीघ्र प्रारंभ करने के लिए कहा।

आरसीएच आउटरीच शिविर के दौरान, स्वास्थिया मेडिकल सेंटर के विशेषज्ञ चिकित्सकों (स्त्री रोग विशेषज्ञ और बाल रोग विशेषज्ञ) ने आयुष्मान आरोग्य मंदिर/प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, स्वराज द्वीप के चिकित्सा अधिकारी (प्रभारी), अन्य चिकित्सा अधिकारियों और पैरामेडिकल स्टाफ के सहयोग से 23 गर्भवती महिलाओं (यूएसजी सहित), 10 सामान्य स्त्री रोग मामलों और 24 बच्चों की जांच की। इसके अलावा, टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत छाती के एक्स–रे के माध्यम से भी लोगों की स्क्रीनिंग की गई।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार आगे, ज़िला कार्यक्रम प्रबंधक ने स्वराज द्वीप और शहीद द्वीप के दोनों प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में जन आरोग्य समितियों (जेएएस) के साथ अलग–अलग दिनों में अभिमुखीकरण–सह–बैठक आयोजित की, ताकि सामुदायिक सहभागिता को सुदृढ़ किया जा सके। साथ ही, दोनों स्वास्थ्य केंद्रों का कायाकल्प मूल्यांकन भी किया गया, जिसमें नामित आयुष चिकित्सा अधिकारी और जन स्वास्थ्य नर्स प्रभारी शामिल रहे। इस प्रक्रिया के तहत सुविधाओं में कमियों की पहचान कर आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने की दिशा में पहल की गई, जिससे अवसंरचना और सेवा गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित किया जा सके।

महात्मा गांधी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान में मैंग्रोव जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

श्री विजय पुरम, 29 मार्च।

वन विभाग के कार्य योजना प्रभाग द्वारा 28 और 29 मार्च, 2026 को दक्षिण अण्डमान के वंडूर स्थित महात्मा गांधी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान (एमजीएमएनपी) में कॉलेज छात्रों और प्रभाग के फ्रंटलाइन कर्मियों के लिए मैंग्रोव जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भारत सरकार के राष्ट्रीय तटीय मिशन के अंतर्गत बायोस्फीयर प्रबंधन कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य मैंग्रोव संरक्षण एवं प्रबंधन के प्रति कर्मचारियों और छात्रों में जागरूकता बढ़ाना था।

इस कार्यक्रम में श्री विजय पुरम के जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय तथा पांडिचेरी विश्वविद्यालय, ब्रुक्शाबाद, श्री विजय पुरम के समुद्री जीवविज्ञान एवं महासागर अध्ययन विभाग के कुल 44 छात्रों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त, कार्य योजना प्रभाग के 40 कर्मचारियों, जिनमें फ्रंटलाइन कर्मी, लिपिकीय कर्मचारी एवं सहायक स्टाफ शामिल थे, ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की।

प्रतिभागियों को राष्ट्रीय उद्यान क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के प्रवाल (कोरल) और अन्य समुद्री जीवों, जिनमें समुद्री ककड़ी (सी कुकुंबर) की कुछ प्रजातियां भी शामिल हैं, को देखने का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ। साथ ही, उन्होंने मैंग्रोव की विभिन्न प्रजातियों जैसे राइजोफोरा एपिकुलेटा, राइजोफोरा स्टाइलोसा, ब्रुगुएरा जिम्नोराइज़ा, एविसेनिया मरीना, ज़ायलोकार्पस ग्रेनाटम, ज़ायलोकार्पस रम्पी, हेरिटिएरा लिटोरालिस, एक्सोएकेरिया अगालोचा आदि को भी देखा।

श्री जोजू पी. अलाप्पट्ट (आईएफएस), उप वन संरक्षक (कार्य योजना) ने राष्ट्रीय उद्यान क्षेत्र में मैंग्रोव और उनसे संबंधित प्रजातियों की पहचान पर फील्ड सत्र आयोजित किए। उन्होंने मैंग्रोव के महत्व, तटीय संरक्षण में उनकी भूमिका और जैव विविधता संरक्षण में उनके योगदान पर विस्तृत जानकारी भी प्रदान की।

जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों ने समुद्री व्याख्या केन्द्र, एमजीएमएनपी, वंडूर तथा वंडूर तट का भी भ्रमण किया। समुद्री व्याख्या केन्द्र में आयोजित संवादात्मक सत्र के दौरान उप वन संरक्षक (कार्य योजना) ने मरीन नेशनल पार्क के महत्व और उसकी जैव विविधता पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार श्री टी.पी. मुकेश और श्री रॉबिन पॉल, रेंज फॉरेस्ट ऑफिसर्स, कार्य योजना प्रभाग ने पूरे कार्यक्रम का समन्वय किया।

मास्टर वेटरन टेबल टेनिस चैंपियनशिप की नई तिथि घोषित

श्री विजय पुरम, 29 मार्च।

मास्टर वेटरन टेबल टेनिस चैंपियनशिप एवं चयन ट्रायल, जो पहले 11 और 12 अप्रैल, 2026 को आयोजित होने वाला था, अब पुनर्निर्धारित कर 6 अप्रैल, 2026 को आयोजित किया जाएगा। यह चैंपियनशिप पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए 40+, 45+, 50+, 55+, 60+, 65+, 70+ और 75+ आयु वर्गों में आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य खिलाड़ियों का चयन करना है, जो 24 अप्रैल से 4 मई, 2026 तक पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित होने वाली 32वीं राष्ट्रीय मास्टर टेबल टेनिस चैंपियनशिप–2025 में द्वीप समूह का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्राप्त विज्ञप्ति में खिलाड़ियों से अनुरोध किया गया है कि वे 5 अप्रैल, 2026 तक गूगल फॉर्म के माध्यम से अपनी प्रविष्टियां जमा करें। पंजीकरण लिंक एसोसिएशन के व्हाट्सएप समूह के माध्यम से साझा किया जाएगा। अधिक जानकारी या

सहायता के लिए प्रतिभागी श्री विजय पुरम स्थित राज्य ओलंपिक संघ से संपर्क कर सकते हैं या 7695046951/9474225669 पर कॉल कर सकते हैं।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

पश्चिम एशिया संकटः देश में ईंधन आपूर्ति सामान्य, पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध

नई दिल्ली, 29 मार्च।

पश्चिम एशिया में जारी संकट और होर्मुज जलडमरूमध्य के बंद रहने के बीच केंद्र सरकार ने कहा कि देश में पेट्रोल, डीजल और एलपीजी की पर्याप्त उपलब्धता है और आपूर्ति पूरी तरह सामान्य बनी हुई है। सरकार ने नागरिकों से अफवाहों पर ध्यान न देने और घबराहट में खरीदारी से बचने की अपील की है।

केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अनुसार, देशभर के सभी पेट्रोल पंप सामान्य रूप से संचालित हो रहे हैं। कच्चे तेल का पर्याप्त भंडार मौजूद है और सभी रिफाइनरियां उच्च क्षमता पर काम कर रही हैं। पेट्रोल और डीजल का भी पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध है। घरेलू मांग को देखते हुए रिफाइनरियों से एलपीजी उत्पादन बढ़ाया गया है। मंत्रालय ने बताया कि सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क में 10 रुपये प्रति लीटर की कटौती की है। साथ ही घरेलू उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए डीजल पर 21.5 रुपये प्रति लीटर और एटीएफ पर 29.5 रुपये प्रति लीटर का निर्यात शुल्क लगाया गया है।

घरेलू पाइप्ड गैस और सीएनजी–ट्रांसपोर्ट के लिए 100 प्रतिशत आपूर्ति जारी है। औद्योगिक और वाणिज्यिक उपभोक्ताओं को उनकी औसत खपत का लगभग 80 प्रतिशत गैस मिल रही है, जबकि उर्वरक संयंत्रों को 70 से 75 प्रतिशत आपूर्ति दी जा रही है। आपूर्ति बनाए रखने के लिए अतिरिक्त एलएनजी और आरएलएनजी की व्यवस्था की जा रही है। मार्च महीने में 2.9 लाख से अधिक नए पीएनजी कनेक्शन दिए गए हैं।

एलपीजी आपूर्ति भी सामान्य बनी हुई है। एक दिन में 55 लाख से अधिक घरेलू सिलेंडर वितरित किए गए हैं और किसी भी डीलर के पास गैस खत्म होने की सूचना नहीं है। ऑनलाइन बुकिंग 94 प्रतिशत तक पहुंच गई है, जबकि डिलीवरी ऑथेंटिकेशन कोड आधारित वितरण 53 प्रतिशत से बढ़कर 84 प्रतिशत हो गया है।

एक जैसा ही सोचते हैं जैमिनी, चैटजीपीजी और दूसरे एआई चैटबॉट, यूज करने वालों के लिए है ये खतरा

नई दिल्ली, 29 मार्च।

ज्यादातर लोग अलग–अलग कामों के लिए अलग–अलग एआई चैटबॉट्स यूज करते हैं. Claude को कई लोग रिसर्च के लिए अच्छा मानते हैं तो जनरल यूज के लिए ChatGPT को प्रेफर किया जाता है. अब एक स्टडी में चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है. स्टडी में कहा गया है कि वो चाहे गूगल का जेमिनी हो, एंथ्रोपिक का Claude हो या मेटा का Llama, ये अलग–अलग होने के बावजूद एक जैसा ही सोचते हैं. जब इनको कुछ क्रिएटिव काम करने को कहा जाता है तो ये एक ही तरह के कॉन्सेप्ट के सहारे आगे बढ़ते हैं. इससे यूजर की क्रिएटिविटी को खतरा बढ़ गया है.

इंजीनियरिंग ऐप्लिकेशन्स ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस में पब्लिश हुई स्टडी में बताया गया है कि बड़ी कंपनियों के अलग–अलग मॉडल एक ही तरह से सोचते हैं. हर मॉडल को यूज करते समय रिस्पॉन्स अलग और काम का लग सकता है, लेकिन गौर से देखने पर अलग ही पैटर्न नजर आता है. ये मॉडल अधिकतर प्रॉम्प्ट्स के ऐसे रिस्पॉन्स देते हैं, जो एक जैसे होते हैं. स्टडी में रिसर्चर ने इंसानों और एआई मॉडल्स को कुछ क्रिएटिव टेस्ट दिए थे. रिजल्ट में पता चला कि एआई मॉडल्स की तुलना में इंसानों के आइडिया की रेंज ज्यादा थी.

स्टडी में रिसर्चर ने अलग–अलग कंपनियों के 20 से ज्यादा मॉडल्स को 100 लोगों के अगेंस्ट टेस्ट किया था. एआई मॉडल से मिले रिस्पॉन्स की रेंज इंसानी आइडिया से कम थी. जब इनमें समानता देखी गई तो एआई मॉडल के जवाबों में ज्यादा यूनिफॉर्मिटी देखी गई, जबकि इंसानों के रिस्पॉन्स बहुत वाइड थे. रिस्पॉन्स के साथ–साथ टास्क में भी ऐसा ही देखा गया. एआई मॉडल एक जैसी स्ट्रक्चर और रिपीटेड फ्रेजिंग को यूज कर रहे थे. जब एआई सिस्टम को क्रिएटिविटी का यूज करने को कहा गया तो रिजल्ट थोड़ा बदला, लेकिन फिर भी इंसानों के बराबर नहीं आ पाया.

जब आप पर्सनल काम के लिए एआई को यूज कर रहे हैं तो इसके रिस्पॉन्स इंप्रेसिव लग सकते हैं और कई मामलों में इंसानी सोच से बेहतर जवाब भी मिल सकते हैं, लेकिन जब इसे बड़े स्तर पर यूज किया जाता है तो स्थिति चिंताजनक हो जाती है. इसकी वजह यह है कि जब अलग–अलग लोग किसी एक ही टूल को यूज करेंगे तो इसके पैटर्न उभरकर सामने आएंगे, जिससे अलग–अलग लोगों को भी एक जैसे ही आईडियाज मिलेंगे.

कच्चे तेल से क्या–क्या चीजें बनती हैं, जानें डायरेक्ट क्यों नहीं कर सकते इस्तेमाल?

नई दिल्ली, 29 मार्च।

मिडिल ईस्ट में चल रहे तनाव का असर कच्चे तेल की सप्लाई पर भी पड़ा है. कच्चा तेल आधुनिक जीवन को चलाने वाली सबसे जरूरी चीज है. लेकिन इतनी ज्यादा अहमियत होने के बावजूद भी कच्चा तेल अपने प्राकृतिक रूप में लगभग बेकार ही होता है. आइए जानते हैं कि कच्चे तेल से क्या–क्या चीजें बनती हैं और इसे इसके प्राकृतिक रूप में इस्तेमाल क्यों नहीं कर सकते.

कच्चा तेल रसायनों का एक कच्चा खजाना होता है. एक बार रिफाइनरियों में इसकी प्रोसेसिंग हो जाने के बाद इसे अलग–अलग हिस्सों में बांट दिया जाता है. हर हिस्से का इस्तेमाल एक खास उत्पाद को बनाने में होता है. इन उत्पादों पर हम रोजाना निर्भर होते हैं. सबसे साफ श्रेणी है ईंधन. पेट्रोल, डीजल, केरोसिन, जेट इंजन और एलपीजी कच्चे तेल से ही बनते हैं.

गाड़ी, हवाई जहाज और घरों को ऊर्जा देने में ये ईंधन काफी मदद करते हैं. रिफायनिंग के बिना इनमें से कोई भी चीज इस्तेमाल लायक रूप में मौजूद नहीं होती. ईंधन के अलावा प्लास्टिक और रबर बनाने में भी कच्चे तेल का ही इस्तेमाल होता है. बोतल, खिलौने, टायर और पाइप जैसी रोजमर्रा की चीजें पेट्रोलियम आधारित रसायनों का इस्तेमाल करके ही बनाई जाती हैं. असल में आपके पास मौजूद ज्यादातर सिंथेटिक चीजों का किसी ना किसी तरह से कच्चे तेल से ही कोई ना कोई जुड़ाव जरूर है.

इसी के साथ पॉलिएस्टर या नायलॉन से बने कपड़े, दीवारों पर लगा पेंट, डिटर्जेंट, मोमबत्ती और यहां तक की शू पॉलिश भी रिफाइंड पेट्रोलियम उत्पादों से ही बनते हैं. हैरानी की बात यह है कि कच्चे तेल का कॉस्मेटिक से भी गहरा जुड़ा है. लिपस्टिक, काजल, फाउंडेशन, परफ्यूम और पेट्रोलियम जेली जैसे उत्पाद अपनी बनावट और स्थिरता के लिए पेट्रोलियम से बने पदार्थों पर ही निर्भर होते हैं.

कच्चे तेल को उसके कच्चे रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता. पहली वजह यह है कि यह हाइड्रोकार्बन का एक जटिल मिश्रण होता है. इसका मतलब है कि इसमें कई अलग–अलग कंपाउंड आपस में मिले होते हैं. इन्हें उपयोगी बनाने के लिए फ्रैक्शनल डिस्टिलेशन नमक रिफायनिंग प्रक्रिया के जरिए अलग करना जरूरी होता है. इसी के साथ कच्चे तेल में सल्फर, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन और यहां तक की भारी धातुओं जैसी अशुद्धियां होती हैं. अगर सीधे तौर पर इस्तेमाल किया जाए तो ये अशुद्धियां इंजनों को नुकसान पहुंचा सकती हैं.

इसके अलावा एक और बड़ी समस्या है दहन. कच्चा तेल सही तरीके से नहीं जलता. यह काफी ज्यादा धुआं और हानिकारक उत्सर्जन को पैदा करता है. इससे यह आधुनिक इंजन या घरेलू इस्तेमाल के लिए सही नहीं होता. इन सबके अलावा कच्चा तेल काफी ज्यादा गाढ़ा होता है और आसानी से बहता नहीं. इस वजह से बिना प्रोसेसिंग के इसे ईंधन प्रणालियों या पाइपलाइनों के जरिए पहुंचना मुमकिन नहीं होता.

समुंदर में एक नॉटिकल माइल तक केबल बिछाने का कितना खर्च, दुनिया में कहां से कहां तक बिछे केबल?

नई दिल्ली, 29 मार्च।

आज हम जो तेज इंटरनेट इस्तेमाल करते हैं उसका बड़ा हिस्सा समंदर के नीचे बिछे फाइबर ऑप्टिक केबल्स के जरिए चलता है. ये केबल्स महाद्वीपों को जोड़ते हैं और वैश्विक संचार की रीढ़ माने जाते हैं. दुनिया भर में हजारों किलोमीटर लंबे ये नेटवर्क डेटा को एक देश से दूसरे देश तक कुछ ही सेकंड में पहुंचाते हैं.

समंदर में केबल बिछाना कोई आसान या सस्ता काम नहीं है. जानकारी के अनुसार, आमतौर पर एक नॉटिकल माइल (करीब 1.85 किलोमीटर) केबल बिछाने का खर्च लगभग 30,000 से 50,000 डॉलर (लगभग 25 लाख से 40 लाख रुपये) तक हो सकता है. हालांकि यह लागत कई चीजों पर निर्भर करती है जैसे समुद्र की गहराई, रास्ते में चट्टानें, समुद्री गतिविधियां और तकनीकी जटिलताएं. गहरे समुद्र में केबल बिछाना कुछ हद तक सस्ता होता है जबकि तटीय इलाकों में काम ज्यादा महंगा पड़ता है.

दुनिया का ज्यादातर इंटरनेट समंदर के नीचे बिछे केबल्स के जरिए चलता है. प्रशांत और अटलांटिक महासागर में करीब 14 लाख किलोमीटर लंबा केबल नेटवर्क मौजूद है. इन केबल्स को बिछाने में बड़ी टेक कंपनियों जैसे Google, Microsoft और Meta (फेसबुक) का बड़ा योगदान है. अटलांटिक महासागर यूरोप और अमेरिका को जोड़ता है जबकि प्रशांत महासागर अमेरिका और एशिया के बीच कनेक्टिविटी देता है. इन दोनों के जरिए दुनिया के लगभग सभी महाद्वीपों तक 95 प्रतिशत से ज्यादा इंटरनेट ट्रैफिक पहुंचता है. भारत को मिलने वाला अंतरराष्ट्रीय इंटरनेट मुख्य रूप से लाल सागर और होर्मुज स्ट्रेट के जरिए आता है. लाल सागर में करीब 17 और होर्मुज स्ट्रेट में लगभग 20 अंडरसी केबल्स बिछी हुई हैं. इनमें AAE-1, फाल्कन, गल्फ ब्रिज इंटरनेशनल और टाटा TGN–गल्फ जैसी प्रमुख लाइनें शामिल हैं जो भारत को ग्लोबल डेटा नेटवर्क से जोड़ती हैं. ये सभी केबल्स भारत में Mumbai, Chennai, Kochi, Thoothukudi और Thiruvananthapuram जैसे शहरों में बने केबल लैंडिंग स्टेशनों से जुड़ी हैं. इन्हीं स्टेशनों के जरिए देश के अलग–अलग हिस्सों तक इंटरनेट पहुंचाया जाता है.

इन केबल्स को खास जहाजों की मदद से समुद्र में बिछाया जाता है. पहले समुद्र के तल का सर्वे किया जाता है फिर केबल को सावधानी से नीचे छोड़ा जाता है. उथले पानी में इन्हें समुद्र के भीतर दबाकर सुरक्षित किया जाता है ताकि जहाजों के एंकर या मछली पकड़ने के जाल से नुकसान न हो.

क्यूएस रैंकिंग 2026 में भारत का जलवा, टॉप 50 में चमके आईआईटी, जेएनयू और आईआईएम

नई दिल्ली, 29 मार्च।

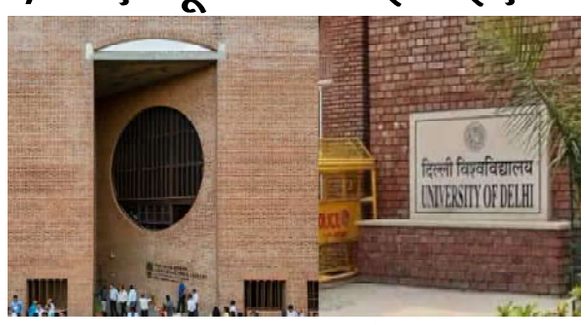

दुनिया के बड़े मंच पर इस बार भारत की उच्च शिक्षा ने जोरदार दस्तक दी है. पढ़ाई और शोध के मामले में भारतीय संस्थानों ने ऐसा प्रदर्शन किया है कि अब पूरी दुनिया उनकी तरफ देखने लगी है. बुधवार को जारी क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में भारत के कई बड़े संस्थानों ने शानदार जगह बनाई है. खास बात यह है कि देश के चार प्रमुख विश्वविद्यालय दुनिया के टॉप 50 में शामिल हुए हैं, जो अपने आप में बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है.

इस लिस्ट में IIT, JNU और आईआईएम अहमदाबाद जैसे नाम शामिल हैं. खासकर प्ड अहमदाबाद ने बिजनेस, मैनेजमेंट और मार्केटिंग जैसे विषयों में दुनिया के टॉप 50 में जगह बनाकर नया रिकॉर्ड बना दिया है. यह पहली बार है जब मार्केटिंग जैसे क्षेत्र में भारत ने इतनी मजबूत मौजूदगी दिखाई है.

लंदन की संस्था QS क्वाक्वेरेली साइमंड्स हर साल यह रैंकिंग जारी करती है. इस बार का संस्करण काफी खास रहा, क्योंकि इसमें 100 से ज्यादा देशों के करीब 1900 विश्वविद्यालयों और 21 हजार से ज्यादा कोर्स का आकलन किया गया.

इस लिस्ट में भारत ने जो जगह बनाई है, वह देश की शिक्षा व्यवस्था में हो रहे बदलाव को दिखाती है. आंकड़ों के मुताबिक, इस साल भारत को टॉप 50 में कुल 27 स्थान मिले हैं. यह संख्या पिछले साल के मुकाबले दोगुनी से भी ज्यादा है, जो साफ बताती है कि भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है.

इस रैंकिंग में इंडियन स्कूल ऑफ माइंस (ISM), धनबाद ने भी शानदार प्रदर्शन किया है. खनन और खनिज इंजीनियरिंग के क्षेत्र में इस संस्थान को दुनिया में 21वां स्थान मिला है. यह उपलब्धि बताती है कि तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भारत अब सिर्फ भाग नहीं ले रहा, बल्कि आगे भी निकल रहा है.

IIM अहमदाबाद का प्रदर्शन इस बार खास चर्चा में है. बिजनेस और मैनेजमेंट स्टडीज के साथ–साथ मार्केटिंग में भी इसे 21वीं रैंक मिली है. खास बात यह है कि मार्केटिंग के क्षेत्र में यह भारत की पहली ऐसी उपलब्धि है, जब किसी संस्थान ने वैश्विक स्तर पर इतनी ऊंची जगह बनाई है.

इस रैंकिंग में IIT बॉम्बे, IIT खड़गपुर, IIT मद्रास और JNU जैसे संस्थानों ने भी टॉप 50 में अपनी जगह बनाई है. ये सभी संस्थान लंबे समय से देश की शिक्षा की पहचान रहे हैं, लेकिन अब उनकी चमक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी साफ दिखाई दे रही है.

अगर इस बार के प्रदर्शन की बात करें तो IIT दिल्ली ने सबसे शानदार काम किया है. इस संस्थान ने एक साथ छह विषयों में टॉप 50 में जगह बनाई है. केमिकल इंजीनियरिंग में पहली बार टॉप 50 में पहुंचना, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग में अच्छा स्थान और मैकेनिकल इंजीनियरिंग में एक दशक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन रहा. इसके अलावा कंप्यूटर साइंस में भी इसने 45वां स्थान हासिल किया है.

भारत में मत्स्य पालन आजीविका और खाद्य सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण स्रोतः केंद्रीय वाणिज्य मंत्री

नई दिल्ली, 29 मार्च।

वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत में मत्स्य पालन आजीविका और खाद्य सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो 90 लाख से अधिक मछुआरों का समर्थन करता है। इनमें अधिकतर छोटे और पारंपरिक मछुआरे शामिल हैं। श्री गोयल ने कैमरून के याउंडे में विश्व व्यापार संगठन के 14वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में मत्स्य पालन सब्सिडी पर एक सत्र में यह बात कही।

सोशल मीडिया पर पोस्ट में श्री गोयल ने बताया कि सत्र के दौरान उन्होंने भारत के सक्रिय और ऐतिहासिक संरक्षण प्रयासों पर प्रकाश डाला, जिसमें मछली पकड़ने पर लगा वार्षिक प्रतिबंध भी शामिल है। श्री गोयल ने कहा कि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि उभरते निर्णय निष्पक्ष हों और कमजोर समुदायों पर उनका असमान असर न पड़े।

श्री गोयकारी बाढ़ से प्रभावित लोगों के प्रति भारत की गहरी एकजुटता और मोजाल ने विश्व व्यापार संगठन के सम्मेलन के दौरान मोज़ाम्बिक के अर्थव्यवस्था मंत्री बेसिलियो ज़ेफ़ानियास मुहाते से भी मुलाकात की। इस दौरान दोनों पक्षों ने सम्मेलन के एजेंडे पर विचार साझा किए। इस बैठक में दोनों देशों के प्रमुख क्षेत्रों में व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने पर भी चर्चा हुई। श्री गोयल ने हाल में आई विनाशम्बिक को निरंतर समर्थन देने की प्रतिबद्धता भी व्यक्त की।

इतिहास के पन्नों में 30 मार्च : भारतीय सिनेमा का ऐतिहासिक दिन, जब सत्यजीत रे को मिला ऑस्कर सम्मान

नई दिल्ली, 29 मार्च।

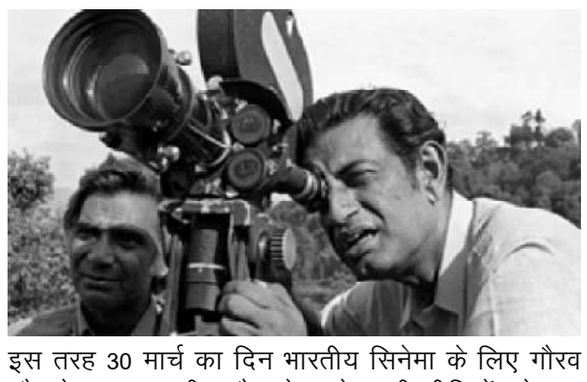

भारतीय सिनेमा के इतिहास में 30 मार्च की तारीख एक विशेष महत्व रखती है। इसी दिन वर्ष 1992 में महान फिल्मकार सत्यजीत रे को प्रतिष्ठित ऑस्कर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया था। यह सम्मान उनके सिनेमा में अतुलनीय योगदान के लिए दिया गया, जिसने भारत को वैश्विक फिल्म जगत में नई पहचान दिलाई।

सत्यजीत रे भारतीय सिनेमा के ऐसे युगपुरुष माने जाते हैं, जिन्होंने अपनी फिल्मों के जरिए समाज, मानवीय संवेदनाओं और यथार्थ को बेहद सशक्त तरीके से पर्दे पर उतारा। उन्हें 1992 में ही देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया, जबकि इससे पहले 1984 में उन्हें दादा साहब फाल्के पुरस्कार भी मिल चुका था। अपने करियर में उन्होंने लगभग 37 फिल्मों का निर्देशन किया, जिनमें पाथेर पांचाली, अपराजीतो, अपुर संसार और चारूलता जैसी क्लासिक फिल्में शामिल हैं। इन फिल्मों ने न केवल भारतीय बल्कि विश्व सिनेमा पर भी गहरा प्रभाव छोड़ा।

गौरतलब है कि एकेडमी अवार्ड, जिसे आमतौर पर ऑस्कर कहा जाता है, फिल्म जगत का सबसे प्रतिष्ठित सम्मान माना जाता है। इसकी शुरुआत 1929 में अकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज द्वारा की गई थई और यह सिनेमा की विभिन्न विधाओं में उत्ष्ट प्रदर्शन के लिए दिया जाता है। भारतीय सिनेमा की बात करें तो 'मदर इंडिया' पहली ऐसी फिल्म थी, जिसे 1957 में ऑस्कर के सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म श्रेणी में नामांकन मिला था। इस तरह 30 मार्च का दिन भारतीय सिनेमा के लिए गौरव और प्रेरणा का प्रतीक है, जो आने वाली पीढ़ियों को उत्ष्टता की ओर बढ़ने का संदेश देता है।

महत्वपूर्ण घटनाचक्र– 1867 – अमेरिका ने रूस से अलास्का को 7.2 मिलियन डॉलर में खरीदने की प्रक्रिया पूरी की।
1919 – महात्मा गांधी ने रॉलेक्ट एक्ट के विरोध में राष्ट्रव्यापी आंदोलन की घोषणा की।
1949 –जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर और बीकानेर रियासतों के विलय से 'वृहत्तर राजस्थान' संघ बना, जो आज 'राजस्थान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
1953 – अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपने संशोधित 'एकी.त क्षेत्र सिद्धांत' (न्दपपिमक थ्पमसक जैमवतल) की घोषणा की।
1981 – अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन पर वाशिंगटन में जानलेवा हमला हुआ, जिसमें वे घायल हुए।
1998 – चीन के उत्तरी हिस्से शिनदोंग में भेंड़ की हड्डी पर उत्कीर्ण 3000 साल पुरानी कुछ शब्दावलियां प्राप्त हुईं।

त्राटक क्रिया : आंखों की रोशनी के साथ दिमाग को भी बनाती है तेज

नई दिल्ली, 29 मार्च।

आज के आधुनिक और तेज रतार युग में ज्यादातर लोगों को अपने जीवन में किसी न किसी बात को लेकर तनाव या चिंता रहती है।किसी भी प्रकार की टेंशन इंसान को शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर बनाती है। इससे आंखों की रोशनी, सोचने और समझने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऐसे में स्वस्थ रहने के लिए हेल्दी लाइफस्टाइल का होना बहुत जरूरी है।

इसी को लेकर भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने योग और प्राणायाम को जीवन में शामिल करने के साथ अपनी आंखों की रोशनी को बढ़ाने के लिए 'त्राटक क्रिया' करने की सलाह दी है।त्राटक क्रिया एक प्राचीन शुद्धिकरण है, जिसे करने के लिए व्यक्ति को बिना पलक झपकाए किसी एक बिंदु, दीपक की लौ या वस्तु को एकाग्रता से बैठकर देखना होता है।

मंत्रालय का कहना है कि त्राटक क्रिया न केवल आंखों की रोशनी बढ़ाती है, बल्कि मानसिक स्पष्टता और स्मृति को भी तेज करती है। अगर कोई व्यक्ति नियमित रूप से त्राटक क्रिया करता है, तो इससे कई स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं।आंखें साफ और चमत्कारिक : त्राटक क्रिया करने से आंखें साफ, चमत्कारिक और आकर्षक बनती हैं। इससे आंखों की रोशनी बढ़ती है।

स्मृति, एकाग्रता और मस्तिष्क का विकास : त्राटक क्रिया व्यक्ति के चीजों को याद रखने की क्षमता और मन की चंचलता को कम कर फोकस के साथ सोचने और समझने की क्षमता को बेहतर बनाती है। मस्तिष्क का विकास होता है।

नेत्र विकारों में सहायक : त्राटक क्रिया हर रोज नियमित रूप से करने से आंखों से जुड़ी समस्या कम होती है। आंखों की मांसपेशियां मजबूत होती हैं और तनाव दूर होता है।

आंतरिक ज्योति प्रज्ज्वलित : त्राटक एक ऐसी क्रिया है, जिससे व्यक्ति का आंतरिक ज्योति प्रज्वलित होता है। आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति दिन–प्रतिदिन बेहतर होती है।

सकारात्मक परिवर्तन : त्राटक क्रिया करने से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और नकारात्मक एनर्जी दूर होती है। इसी के साथ मन को शांति की अनुभूति होती है।

आज्ञाचक्र सक्रिय : इससे मानसिक स्पष्टता बेहतर होती है, जिससे व्यक्ति बेहतर निर्णय ले पाता है और उसकी दूरदर्शिता बढ़ती है।

भारतीय नौसेना की मेजबानी में आईओएनएस समुद्री अभ्यास में 16 देशों ने भाग लिया

नई दिल्ली, 29 मार्च।

भारतीय नौसेना ने 27 मार्च 2026 को कोच्चि स्थित दक्षिणी नौसेना कमान के मैरीटाइम वारफेयर सेंटर में आईओएनएस मैरीटाइम एक्सरसाइज (आईएमईएक्स) टेबल–टॉप एक्सरसाइज (टीटीएक्स) 2026 का आयोजन किया। इस उच्च स्तरीय बैठक में हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस) से जुड़े देशों की नौसेनाओं के प्रतिनिधि, आईओएस सागर के अंतरराष्ट्रीय अधिकारी और भारतीय नौसेना के अधिकारी शामिल हुए। इस दौरान हिंद महासागर क्षेत्र में उभर रही गैर–पारंपरिक समुद्री सुरक्षा चुनौतियों पर चर्चा की गई।

इस अभ्यास में बांग्लादेश, फ्रांस, इंडोनेशिया, केन्या, मालदीव, मॉरीशस, म्यांमार, सेशेल्स, सिंगापुर, श्रीलंका, तंजानिया और तिमोर–लेस्ते के देशों ने भाग लिया। यह विविध बहुराष्ट्रीय प्रतिनिधित्व पूरे क्षेत्र में आपसी विश्वास को बढ़ावा देने और सहयोगात्मक समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने की साझा प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। सोलह वर्षों के अंतराल के बाद भारत द्वारा 2026–2028 चक्र के लिए आईओएनएस की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ, आईएमईएक्स टीटीएक्स 2026 क्षेत्रीय समुद्री नेतृत्व को मजबूत करने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

यह अभ्यास एक आधुनिक सिमुलेशन वातावरण में किया गया, जिसमें हिंद महासागर क्षेत्र से जुड़े जटिल समुद्री सुरक्षा मुद्दों पर काम किया गया। यह क्षेत्र वैश्विक व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति और संपर्क के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अभ्यास का मुख्य उद्देश्य था कि भाग लेने वाली नौसेनाएं एक–दूसरे के काम करने के तरीके और चुनौतियों को बेहतर समझें, आपसी समन्वय जैसे सूचना साझा करना और फैसले लेने की प्रक्रिया को मजबूत करें, और आईओएनएस के दिशा–निर्देशों को व्यावहारिक रूप से परखकर उन्हें और बेहतर बनाएं।

इस अभ्यास में बिना वास्तविक तैनाती के अलग–अलग संभावित परिस्थितियों का अभ्यास किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को पेशेवर आदान–प्रदान के नए रास्ते तलाशने और आपसी विश्वास को गहरा करने में सक्षम बनाया।

अमरीका से तीन प्राचीन मूर्तियां भारत लौट रही, शोध में अवैध रूप से निकासी की पुष्टि

नई दिल्ली, 29 मार्च। अमरीका में व्यापक शोध के बाद तीन अमूल्य प्राचीन मूर्तियां भारत लौट रही हैं। शोध में पुष्टि हुई है कि इन मूर्तियों को अवैध रूप से देश से बाहर ले जाया गया था। इन मूर्तियों में नौवीं शताब्दी की शिव नटराज की कांस्य प्रतिमा, बारहवीं शताब्दी की शिव और उमा की सोमस्कंद प्रतिमा और सोलहवीं शताब्दी की संत सुंदरार और परवी की प्रतिमा शामिल हैं। प्राचीन मूर्तियों की वापसी के औपचारिक रूप देने वाले समझौते पर अमरीका में भारतीय दूतावास के उप प्रमुख राजदूत नामग्या खम्पा और राष्ट्रीय एशियाई कला संग्रहालय के निदेशक डॉ. चेस रॉबिन्सन ने हस्ताक्षर किए। भारतीय दूतावास के अनुसार शिव नटराज की कांस्य प्रतिमा स्मिथसोनियन संग्रहालय को दीर्घकालिक ऋण पर दी जाएगी। इससे जनता इसे देख सकेगी और भारत की समृद्ध कलात्मक और आध्यात्मिक विरासत की सराहना कर सकेगी।

संग्रहालय की जांच में प्रतिमाओं के लेन–देन के इतिहास का विस्तृत अध्ययन शामिल था। इसमें 1956 से 1959 के बीच मंदिरों में मूर्तियों की उपस्थिति को दर्शाने वाले पुडुचेरी में फ्रांसीसी संस्थान के फोटो अभिलेखागार से प्राप्त फोटोग्राफिक साक्ष्यों का उपयोग किया गया था। इन निष्कर्षों को लेकर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने पुष्टि की कि कांस्य मूर्तियां भारतीय कानूनों का उल्लंघन करते हुए ले जाई गई थी।

भारतीयों में पेट की चर्बी सबसे बड़ा स्वास्थ्य संकट–केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री

नई दिल्ली, 29 मार्च।

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेन्द्र सिंह ने यहां एक कार्यक्रम में कहा कि पेट के आसपास जमा चर्बी यानी केंद्रीय मोटापा, सामान्य मोटापे की तुलना में अधिक खतरनाक है। भारतीय संदर्भ में कई बार दुबले–पतले दिखने वाले लोगों में भी आंतरिक चर्बी अधिक होती है, जो गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती है। डॉ. जितेन्द्र सिंह ने यहां हृदय रोग विज्ञान की व्यापक पाठ्य पुस्तक का लोकार्पण करते हुए कहा कि केंद्रीय मोटापा, भले ही व्यक्ति सामान्य दिखे, फिर भी मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, वसायुक्त यकृत और वसा विकार जैसी कई चयापचय संबंधी बीमारियों का जोखिम बढ़ाता है। पेट की चर्बी अपने आप में एक स्वतंत्र जोखिम कारक है।

उन्होंने कहा कि भारत में मोटापे की समस्या तेजी से बढ़ रही है लेकिन पेट के आसपास चर्बी का अनुपात असामान्य रूप से अधिक है, जो हृदय एवं चयापचय संबंधी जोखिम को बढ़ाता है। ऐसे में समय पर पहचान और लक्षित उपचार जरूरी है। बदलती जीवनशैली, खानपान की आदतें और शारीरिक गतिविधि की कमी के कारण युवाओं में भी टाइप–2 मधुमेह और हृदय संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं।

उन्होंने कहा कि यह पुस्तक प्रधानमंत्री की उस अपील के अनुरूप है, जिसमें उन्होंने मोटापे से निपटने के लिए जागरूकता बढ़ाने और जीवनशैली में बदलाव, विशेषकर तेल और अस्वास्थ्यकर भोजन के सेवन को कम करने पर जोर दिया है। यह पहल विकसित भारत, स्वस्थ भारत और मोटापा मुक्त भारत के लक्ष्य को आगे बढ़ाती है।

उन्होंने स्वास्थ्य के प्रति संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि बिना वैज्ञानिक समझ के अत्यधिक व्यायाम या अत्यधिक श्रम भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। नियमित दिनचर्या, पर्याप्त नींद और वैज्ञानिक तरीके से अपनाई गई जीवनशैली ही बेहतर स्वास्थ्य का आधार है।

यह पुस्तक प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. एचके चोपड़ा के संपादन में तैयार की गई है, जिसमें देश–विदेश के 300 से अधिक विशेषज्ञों का योगदान है। इसमें 23 खंड और 172 अध्याय शामिल हैं, जो मोटापा और वसा प्रबंधन से जुड़े आधुनिक उपचार, डिजिटल स्वास्थ्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चिकित्सीय निर्णय प्रणाली पर आधारित हैं।

पुस्तक में उभरती हुई औषधियों और उपचारों जैसे जीएलपी–1 रिसेप्टर एगोनिस्ट, वसा कम करने वाली औषधियां, पीसीएसके9 अवरोधक और जीन आधारित उपचारों को भी शामिल किया गया है, जो हृदय रोगों के बेहतर उपचार में सहायक हो सकते हैं।

डॉ. सिंह ने कहा कि मोटापा और वसा असंतुलन भारत और दुनिया में सार्वजनिक स्वास्थ्य के बड़े संकट बनते जा रहे हैं। उन्होंने 2050 तक भारत में मोटापे के मामलों में तेज वृद्धि की आशंका जताते हुए जागरूकता, समय पर जांच और रोकथाम पर जोर दिया।

भारत के किन शहरों में तैयार होती है आपकी रसोई की लाइफलाइन एलपीजी गैस? जान लें पूरी डिटेल

नई दिल्ली, 29 मार्च।

ईरान, इजरायल और अमेरिका के बीच गहराता तनाव सिर्फ सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सीधा असर आपकी रसोई के बजट और सिलेंडर की उपलब्धता पर पड़ रहा है. पश्चिम एशिया में युद्ध के बाद पैदा हुई अनिश्चितता ने वैश्विक तेल बाजार में हलचल मचा दी है, जिससे भारत में एलपीजी की सप्लाई चेन को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं. हालांकि भारत अपनी जरूरत का बड़ा हिस्सा खुद तैयार करता है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय हालातों ने जमाखोरी और किल्लत जैसी चुनौतियों को जन्म दे दिया है.

ईरान और इजरायल के बीच छिड़ी जंग में अमेरिका की एंट्री ने पूरी दुनिया के ऊर्जा बाजार को हिलाकर रख दिया है. भारत अपनी एलपीजी और कच्चे तेल की जरूरतों के लिए एक बड़ी हद तक खाड़ी देशों पर निर्भर है.

युद्ध के कारण समुद्री रास्तों में रुकावट और कच्चे तेल की कीमतों में उछाल आने से भारत में एलपीजी की सप्लाई बाधित होने की खबरें आ रही हैं. इसी डर से कई इलाकों में लोगों ने गैस सिलेंडरों की जमाखोरी शुरू कर दी है, जिससे बाजार में कृत्रिम कमी दिखने लगी है. सरकार ने स्पष्ट किया है कि भंडार पर्याप्त है, लेकिन युद्ध लंबा खिंचने का डर आम जनता के मन में बना हुआ है.

भारत में एलपीजी यानी लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस का उत्पादन जादू की तरह नहीं, बल्कि एक जटिल वैज्ञानिक प्रक्रिया से होता है. यह मुख्य रूप से प्रोपेन और ब्यूटेन गैसों का मिश्रण है. देश की बड़ी तेल रिफाइनरियां कच्चे तेल (Crude Oil) को प्रोसेस करके इसे तैयार करती हैं.

जब कच्चा तेल रिफाइनरी में आता है, तो उसे अलग–अलग तापमान पर उबाला जाता है. इसी 'रिफाइनिंग' प्रोसेस के दौरान पेट्रोल, डीजल और केरोसिन के साथ–साथ एलपीजी गैस भी उप–उत्पाद के रूप में निकलती है. भारत की आत्मनिर्भरता का बड़ा आधार यही रिफाइनरियां हैं.

अगर आप सोच रहे हैं कि आपके सिलेंडर की गैस कहां से आ रही है, तो इसके पीछे देश के कुछ खास शहरों का हाथ है. गुजरात का जामनगर इसमें अग्रणी भूमिका निभाता है. इसके अलावा उत्तर प्रदेश के मथुरा, हरियाणा के पानीपत और बिहार के बरौनी में स्थित रिफाइनरियां उत्तर भारत की मांग पूरी करती हैं.

वहीं पूर्व में पश्चिम बंगाल के हल्दिया और ओडिशा के पारादीप प्लांट अहम हैं. दक्षिण भारत में केरल का कोच्चि और आंध्र प्रदेश का विशाखापट्टनम गैस उत्पादन के बड़े पावरहाउस हैं. ये शहर भारत की रसोई की लाइफलाइन को चालू रखने का काम करते हैं.

सिर्फ कच्चे तेल से ही नहीं, बल्कि जमीन के नीचे से निकलने वाली प्राकृतिक गैस से भी एलपीजी बनाई जाती है. जब गैस फील्ड्स से नेचुरल गैस निकाली जाती है, तो उसमें कई गैसें मिक्स होती हैं. देश के गैस प्रोसेसिंग प्लांट्स में इन गैसों को अलग किया जाता है. असम, गुजरात, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में लगे प्लांट्स में प्रोपेन और ब्यूटेन को अलग करके शुद्ध एलपीजी तैयार की जाती है. यह प्रक्रिया रिफाइनिंग से अलग होती है लेकिन सिलेंडर भरने के लिए उतनी ही जरूरी है.

सरकार ने राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार के लिए मांगे आवेदन, आखिरी तारीख 11 मई

नई दिल्ली, 29 मार्च।

सरकार ने राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार (आरवीपी) 2026 के लिए नामांकन आमंत्रित किए हैं। यह पुरस्कार विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देने वाली एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पहल है। यह उन वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों और नवोन्मेषकों को सम्मानित करता है जिनके कार्यों ने भारत के वैज्ञानिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ाया है और राष्ट्रीय विकास में योगदान दिया है। आरवीपी–2026 पुरस्कार चार अलग–अलग श्रेणियों में प्रदान किए जाएंगे, जिनमें विज्ञान रत्न, विज्ञान श्री, विज्ञान युवा–शांति स्वरूप भटनागर और विज्ञान टीम शामिल हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए सरकार की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि ये पुरस्कार देश के उन वैज्ञानिकों और नवोन्मेषकों की जिज्ञासा और समर्पण की भावना का सम्मान करते हैं जो भारत को वैश्विक ज्ञान नेता के रूप में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। डॉ. सिंह ने यह भी बताया कि ये पुरस्कार उत्कृष्टता और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्र की प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं।

कृषि विज्ञान, परमाणु ऊर्जा, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, रक्षा प्रौद्योगिकी आदि विभिन्न क्षेत्रों में स्व–नामांकन सहित नामांकन खुले हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सूचित किया है कि नामांकन 11 मई तक गृह मंत्रालय के पुरस्कार पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन किए जा सकते हैं।

कौन रखता है भारतीय सेनाओं के जहाजों और विमानों के नाम, जानें क्या है इसके नियम

नई दिल्ली, 29 मार्च।

क्या आपने कभी सोचा है कि भारत के युद्धपोत, लड़ाकू विमान और मिसाइलों के दमदार नाम कौन तय करता है? यह कोई मनमाना या फिर प्रतीकात्मक फैसला नहीं होता. दरअसल इसके पीछे एक पूरी व्यवस्था काम करती है. आइए जानते हैं क्या होती है यह व्यवस्था.

नामकरण की प्रक्रिया का औपचारिक प्रबंधन रक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है. इसमें तीनों सेनाओं की शाखाओं के वरिष्ठ अधिकारी शामिल होते हैं. इससे यह पक्का होता है कि हर नाम राष्ट्रीय मूल्य, सैन्य परंपरा और रणनीतिक पहचान के मुताबिक हो.

नौसेना के पास एक खास निकाय है. इसे आंतरिक नामकरण समिति कहा जाता है. इसका नेतृत्व नौसेना स्टाफ के सहायक प्रमुख करते हैं. इसमें इतिहास, पुरातत्व और परिवहन क्षेत्र के विशेषज्ञ शामिल होते हैं. यह विशेषज्ञ इस बात को पक्का करते हैं कि चुने गए नाम ऐतिहासिक रूप से समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से रेलेवेंट होने चाहिए.

समिति द्वारा सुझाए गए नामों को नौसेना स्टाफ के प्रमुख से अनुमोदन प्राप्त करना जरूरी होता है. इसके अलावा युद्धपोत के आदर्श वाक्यों और प्रतीक चिह्नों के लिए आखिरी अनुमोदन भारत के राष्ट्रपति द्वारा दिया जाता है.

नौसेना के विभाग प्रकार के जहाजों के नामकरण के लिए अलग–अलग परंपराओं का पालन किया जाता है.

विमान वाहक जहाजों के नाम अक्सर 'व' से शुरू होते हैं. जैसे INS विक्रांत. विध्वंसक जहाज के नाम प्रमुख शहरों के नाम पर रखे जाते हैं, फ्रिगेट जहाज के नाम नदियों या फिर हथियारों के नाम पर रखे जाते हैं. इसी के साथ पनडुब्बियों के नाम समुद्री जीव या फिर पौराणिक कथाओं से प्रेरित होते हैं.

भारतीय वायु सेना के विमान और मिसाइल के नाम अक्सर संस्कृत भाषा और भारतीय दर्शन से लिए जाते हैं. तेजस जैसे नाम तेज जैसे गुणों को दर्शाते हैं. इसी के साथ मिसाइल प्रणालियों के नाम प्राकृतिक तत्वों और पौराणिक कथाओं से प्रेरित होते हैं.

यहां तक कि टैंकों के नाम में भी इसी परंपरा का पालन किया जाता है. अर्जुन टैंक का नाम महाभारत के महान योद्धा अर्जुन के नाम पर रखा गया है. यह युद्ध के मैदान में अचूकता, शक्ति और शौर्य का प्रतीक है.

होर्मुज आईलैंड–लाल मिट्टी और रंगीन पहाड़ों वाला अद्भुत द्वीप, जहां समंदर की लहरों का रंग भी है लाल

नई दिल्ली, 29 मार्च।

ईरान के तट पर बसा होर्मुज आईलैंड अपनी प्राकृतिक सुंदरता और अद्भुत भौगोलिक विशेषताओं के कारण दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है। यह स्थान केवल अपनी खूबसूरती के लिए ही नहीं बल्कि यहां की विशेष लाल रंग की मिट्टी के लिए भी चर्चा का मुख्य विषय बना रहता है। अक्सर लोग होर्मुज को केवल एक समुद्री रास्ते के रूप में जानते हैं लेकिन यह एक ऐसा अनोखा शहर है जहां की मिट्टी खाई भी जाती है। होरमुज द्वीप की लाल मिट्टी इस आईलैंड को दुनिया के अन्य सभी पर्यटन स्थलों से काफी अलग बनाती है।

आमतौर पर दुनिया स्ट्रेट ऑफ होर्मुज को केवल एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग मानती है जिससे वैश्विक तेल आपूर्ति का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा गुजरता है। हकीकत में होर्मुज ईरान का एक बेहद पुराना और ऐतिहासिक तटीय शहर है जिससे कुछ ही दूरी पर यह खूबसूरत और रंगीन आईलैंड स्थित है। प्राकृतिक विविधता से भरपूर यह आईलैंड फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी को जोड़ने वाले रास्ते के पास होने के कारण रणनीतिक रूप से भी महत्वपूर्ण है।

होर्मुज आईलैंड की सबसे हैरान करने वाली विशेषता यह है कि यहां के स्थानीय निवासी विशेष रूप से लाल रंग की मिट्टी का सेवन करते हैं। यहां की महिलाएं अपने पीरियड्स के दौरान इस मिट्टी को खाती हैं क्योंकि इसमें प्रचुर मात्रा में आयरन ऑक्साइड मौजूद होता है जो काफी लाभदायक है। आयरन की कमी को प्राकृतिक रूप से पूरा करने का यह पारंपरिक तरीका इस क्षेत्र की संस्कृति और खान–पान का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

इस आईलैंड की मिट्टी में आयरन ऑक्साइड की अधिकता होने के कारण इसका रंग गहरा लाल होता है जो देखने में बिल्कुल खून जैसा प्रतीत होता है। विशेष रूप से जब यहां बारिश होती है तो पानी की बूंदें मिट्टी के रंग को और भी गहरा कर देती हैं जिससे पूरा नजारा खूनी लाल दिखता है। बारिश के दौरान समुंदर के किनारे का यह दृश्य इतना अद्भुत और रोमांचक होता है कि इसे देखने के लिए दूर–दूर से पर्यटक यहां खींचे चले आते।

होर्मुज को केवल लाल मिट्टी के कारण ही नहीं बल्कि इसके अन्य विविध रंगों के कारण 'रेनबो आईलैंड' के नाम से भी पुकारा जाता है। यहां लाल रंग के अलावा पीली, हरी और नारंगी रंग की मिट्टी भी पाई जाती है जो पहाड़ियों और मैदानी इलाकों को सतरंगी छटा प्रदान करती है। आईलैंड के किनारे बनी गुफाओं के भीतर जाने पर पत्थरों पर प्राकृतिक रूप से बनी सतरंगी पट्टियां दिखाई देती हैं जो प्रकृति का एक अनोखा चमत्कार हैं।

समुद्र के किनारे इस सुंदर लाल मिट्टी वाले बीच के पास पर्यटकों के रुकने के लिए बहुत ही आकर्षक और रंगीन छोटे–छोटे होम स्टे बनाए गए हैं। इन विशेष प्रकार के रंगीन और गुंबद जैसे दिखने वाले घरों को फारसी भाषा में 'मजारा' कहा जाता है जो आईलैंड की वास्तुकला को दर्शाते हैं। पर्यटक इन कलरफुल घरों में ठहरकर आईलैंड की सुंदरता का लुत्फ उठाते हैं और यहां के शांत वातावरण में अपनी छुट्टियों का भरपूर आनंद लेते हैं।

होर्मुज केवल एक पर्यटन स्थल नहीं है बल्कि यह ईरान, ओमान और यूएई के बीच स्थित होने के कारण विश्व राजनीति में भी विशेष स्थान रखता है। मिट्टी की इस विशिष्टता और जैव विविधता के कारण वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए भी यह आईलैंड हमेशा से ही अध्ययन का एक बड़ा केंद्र रहा है। लाल समुद्र तट और सतरंगी गुफाओं का यह मेल दुनिया के उन चुनिंदा स्थानों में से एक है जहां प्रकृति ने अपने सबसे गहरे रंग बिखेरे हैं।

छोटा सा लेमन ग्रास है बड़े काम की चीज, खाने से लेकर लगाने में लाभकारी

नई दिल्ली, 29 मार्च।

सदियों से उपचार के लिए आयुर्वेद में औषधीय पौधों का इस्तेमाल होता आया है, लेकिन आज के समय में वैज्ञानिक नाम देकर पुराने औषधीय पौधों और घास को बाजार में बेचा जा रहा है।हम बात कर रहे हैं लेमन ग्रास की, जिसका उपयोग सेलिब्रिटीज से लेकर फिटनेस से जुड़े लोग भी कर रहे हैं। कुछ सालों में लेमन ग्रास का क्रेज लोगों के बीच बहुत बड़ा है, लेकिन सदियों पहले से हमारे आयुर्वेद में लेमन ग्रास का उपयोग होता आ रहा है।

लेमन ग्रास एक औषधीय गुणों से भरपूर घास है, जिसका उपयोग कई तरह की बीमारियों में किया जाता है। आयुर्वेद में लेमन ग्रास को 'भूस्तृण' कहा जाता है, जिसका इस्तेमाल वात, पित्त और कफ दोषों को संतुलित करने में मदद करता है और जोड़ों और मांसपेशियों के दर्द से भी राहत दिलाता है। लेमन ग्रास का स्वाद थोड़ा कड़वा और तीखा होता है, लेकिन इसकी तासीर ठंडी होती है। लेमन ग्रास का सेवन नसों को शांत करता है और तंत्रिका तंत्र को मजबूत करके मस्तिष्क और शरीर के संकेतों को मजबूत करता है।

इसके साथ ही लेमन ग्रास खांसी, बुखार, तपेदिक, कुष्ठ रोग, फाइलेरिया, मलेरिया, आंखों की सूजन, मसूड़ों की सूजन, निमोनिया और रक्त की अशुद्धि से जुड़े विकारों में भी काम आता है। लेमनग्रास का तेल पाचन क्रिया को बेहतर बनाता है, मतली, मासिक धर्म संबंधी समस्याओं और सिरदर्द से राहत देता है। इसके अलावा, लेमनग्रास का लेप

अगर त्वचा संबंधी परेशानी में लगाया जाए तो यह दवा की तरह काम करता है।

अब जानते हैं कि किन–किन तरीकों से लेमन ग्रास का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके लिए रोजाना लेमन ग्रास का ताजा जूस पिया जा सकता है, जो शरीर को टॉक्सिन से मुक्त करने में मदद करेगा और शरीर को अनगिनत लाभ देगा। दूसरा, जूस की जगह इसकी चाय बनाकर भी पी जा सकती है।

अगर आपको काम के बीच कैफीन की जरूरत पड़ती है तो कैफीन की जगह लेमन ग्रास टी का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह स्वाद और सेहत दोनों में बेहतर है। लेमनग्रास तेल का प्रयोग भी कर सकते हैं। नींद की परेशानी और तनाव को दूर करने के लिए लेमनग्रास का तेल सबसे अच्छा विकल्प है। इसे चेहरे पर या माथे पर हल्की मसाज के साथ लगा सकते हैं।